International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 2, February 2017
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्वाधीनता आंदोलन एवं राष्ट्रवाद के विकास में प्रेमचंद की कहानियों की भूमिका

बिंधी कुमारी
एम0 ए0, शोधार्थी
इतिहास विभाग
ल0 ना0 मि0 विश्वविद्यायल दरभंगा

प्रेमचंद ने अपनी स्वाधीनता विषयक कहानियों में स्वाधीनता-आन्दोलन का मार्मिक चित्रण तो किया ही है, साथ ही 'स्वाधीनता' शब्द को व्यापक अर्थ प्रदान किया है। प्रेमचंद के लेखन में स्वाधीनता का पहला और महत्वपूर्ण आशय भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराना है। वे हर हाल में भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त देखना चाहते थे।

प्रेमचंद के कहानी साहित्य में राष्ट्रीयता का स्वर सर्वाधिक मुखर है। उस युग में स्वातंत्र्य आंदोलन ने प्रेमचंद जैसे संवेदनशील कथाकारों में राष्ट्रीयता जैसे प्रबल भाव प्रदान किया। देश को आजाद कराने के प्रयत्न में उस समय देश में अनेक विचारधाराएं काम कर रही थी जिनमें गांधीवादी विचारधारा मूर्धन्य थी। प्रेमचंद गांधी जी के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए थे और राष्ट्रीयता के क्षेत्र में उन्होंने उन्हें अपना आदर्श मानकर चले थे। लोगों की तो यहां तक धारणा है कि 'गांधीजी को उनकी इस संपूर्णता में प्रेमचंद ने ही ग्रहण किया"। चूकिं प्रेमचंद जी ने गांधी जी के भारतीय राजनीति में प्रवेश करने के पहले काफी पहले ही, देश की राजनीतिक_ सामाजिक परिस्थितियों को समझ लिया था और अपनी कहानियों में आम आदमी के माध्यम से अपने विचारों और संवेदनाओं को वाणी देने का अभियान आरंभ कर दिया था। यह तो उन्होंने अनुभव कर ही लिया था कि देश को औपनिवेशिक शासन से छुटकारा मिलना हीं चाहिए परंतु इसके लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक था कि लोगों को ब्रिटिश शासन के अत्याचारों से अवगत कराया जाए और उन में चेतना जागृत की जाए। इसके लिए उन्होंने ऐसी कहानियां लिखी, जिनमें जनशक्ति को प्रबुध करने, अपनी शक्ति और उसकी संभावनाओं के प्रति आश्वासित की चेतना जगाने का भाव था। इसके साथ ही उन्होंने ऐसी कहानियां भी लिखी जिनमें जातिगत ,सांप्रदायिक भेदभाव से मुक्त तथा श्रेष्ठ नैतिक चेतना से संपन्न राष्ट्रीय बोध पैदा हो

औपनिवेशिक शासन ने 19वीं शताब्दी में भारतीय जनमानस में यह भ्रम फैलाने की कोशिश की थी कि हिंदुस्तान बौद्धिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय -चेतना की दृष्टि से इतना पिछड़ा हुआ है कि वह शासन करने के योग्य नहीं है। उन्होंने

भारत के लिए ऐसी शिक्षा प्रणाली का विकास किया जो नस्ल से हिंदुस्तानी पर सोच मानसिकता, रहन-सहन, वेशभूषा आदि से अंग्रेज और मूल अंग्रेज से भी अधिक 'राजभक्त हो, जो अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता ,आर्थिक और बौद्धिक समृद्धि की दृष्टि से एकदम शून्य हों और अपने निजी स्वार्थों के सामने व्यापक समाज के हितों को कोई महत्व ना दें।

प्रेमचंद अंग्रेजों की इस कूटनीति से पूर्णत: जागरूक थे और अपने साहित्य के माध्यम से अंग्रेजों के षड्यंत्रों से भारतीय जनता को अवगत कराते हुए, उन में चेतना जागृत करने का प्रयास कर रहे थे तथा अपने इस उद्देश्य में वह काफी हद तक सफल भी हुए थे क्योंकि प्रेमचंद यह समझ गए थे कि हिंदुस्तान तब तक स्वाधीनता प्राप्त नहीं कर सकता जब तक वहां की जनता पूर्ण रूप से जागरूक ना हो। अतः जब देश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था तब बहुत से साहित्यकार अलग-अलग ढंग से भारतीय जनता में चेतना लाने का प्रयास कर रहे थे। उस समय के लेख इस तथ्य से भलीभांति अवगत थे कि अगर सदियों से पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी हुई भारतीय जनता को जागृत करना है तो 'साहित्य' ही इस कार्य के लिए सबसे उपयुक्त माध्यम है। फलस्वरूप प्रेमचंद भी अपनी कहानियों में आम आदमी के माध्यम से भारतीय जनता में चेतना लाने का प्रयास कर रहे थे। अतएव प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में राष्ट्रीय चेतना को विविध रूपों में अभिव्यक्त किया है और उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम आम आदमी को बनाया। जिससे भारतीय जनता अपनी बात को आसानी से समझ सके और ब्रिटिश शासन के अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठा सकें।

प्रेमचंद इन राजनीतिज्ञों तथा तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों से पूर्णत: प्रभावित हुए थे। जिसकी अभिव्यक्ति उन्हें उनकी कहानियों में यत्र तत्र परिलक्षित होती है। देश को विदेशी दासता की बेड़ियों से मुक्त कराना जनता का प्रथम उद्देश्य था। पूर्णविराम जनता अपने तन, मन, धन से इस कार्य के लिए संघर्षशील थी । चूकिं प्रेमचंद भी अपनी लेखनी द्वारा जनता के मध्य विद्रोह की अग्नि प्रज्जवलित करने में संलग्न थे। उन्होंने नगरीय तथा ग्रामीण दोनों स्थानों की राजनीतिक परिस्थितियों का पर्यवेक्षण अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से किया। नगरों में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आंदोलन का मुख्य उद्देश्य विदेशी शासन से मुक्ति प्राप्त कर आना था, जबकि ग्रामों में राजनीतिक आंदोलन का विशिष्ट उद्देश्य विदेशी शासन से मुक्ति के साथ-साथ सरकार के पिट्ठू अर्थात ग्रामीण जनता के शोषक वर्ग से भी मुक्ति प्राप्त कर आना था। नगरों से अधिक दयनीय स्थिति ग्रामीणों की थी, जिन का शोषण दो तरफ से हो रहा था। एक और विदेशी सरकार इन ग्रामीणों का शोषण कर रही थी, तो दूसरी ओर सरकार के प्रबल समर्थक तथा हितैषी भारतीय भी इन ग्रामीणों का शोषण कर रहे थे। ये शोषण जमींदार, कारिंदे, महाजन

तथा सरकारी अधिकारी जिसमें पुलिस विशेष रूप से थी, आदि सम्मिलित थे। प्रेमचंद ने अपनी विक्रमादित्य विक्रमादित्य का तेगा, ममता, नमक का दरोगा, डीक्री के रुपए, बड़े बाबू आदि कहानियों में औपनिवेशिक शासन की न्याय व्यवस्था आदि के जिस पर ब्रिटिश सरकार और उसके अपितु हिंदुस्तानियों को बड़ा गर्व था, खोखले पन का विश्वसनीय चित्रण प्रस्तुत किया है।

प्रेमचंद की 'विक्रमादित्य की तेगा' कहानी में उस 'सत्य और न्याय' की ओर संकेत किया गया है जो औपनिवेशिक शासन से लुप्त हो गया था। यह प्रेमचंद की ऐतिहासिक कहानी है। जिसके माध्यम से प्रेमचंद बताना चाहते थे कि पहले सत्य और न्याय के लिए किस तरह से व्यक्ति अपनी जान की परवाह तक नहीं करता था लेकिन आज न्याय का जो रूप देखने को मिलता है वह असंतोष जनक है। औपनिवेशिक शासनकाल में न्याय सिर्फ धनिक वर्गों के लिए था, गरीब वर्ग के लिए नहीं। 'नमक का दरोगा' , शीर्षक कहानी में भी औपनिवेशिक शासन की जनविरोधी आर्थिक नीतियों, प्रशासन में फैले भ्रष्टाचार और मध्यम वर्गीय समाज में व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति के लिए नैतिक मूल्यों की उपेक्षा की सच को कलात्मकता के साथ प्रस्तुत किया गया है। अत: ब्रिटिश शासन काल में न्याय व्यवस्था इतनी भ्रष्ट थी कि ईमानदार कर्मचारियों की रक्षा भी नहीं कर पाती थी और एक सफल व्यवसाई इमानदारी को भी खरीद सकता था

प्रेमचंद की 1921 के दशक की कहानियां संपूर्णत: समकालीन उत्तर भारत के जीवन संदर्भों से जुड़ी हुई है। किसी भी जाति के लिए राजनीतिक गुलामी से बड़ी और कोई समस्या नहीं हो सकती। और भारत अब तक लगभग डेढ़ सौ से भी अधिक वर्षों से ब्रिटिश औपनिवेशिक गुलामी झेल रहा था। भारत की यह राजनीतिक पराधीनता बहुत ही जटिल थी और उसके विरुद्ध लगभग साढे तीन दशकों से चल रहा संघर्ष भी राजनीतिक दृष्टि से उतना ही जटिल और अंतरविरोधों विरोधियों से भरा हुआ था। यह संघर्ष एक प्रकार का संवैधानिक संघर्ष था, जिसमें एक राजनीतिक रूप से पराधीन देश उपनिवेश शासन से उसी अधिकार की अकल्पनीय मांग कर रहा था जो उस देश में उसके नागरिकों को उपलब्ध था। प्रेमचंद की कहानियों में समय की गति के साथ राष्ट्रीय स्वर और प्रखर होता गया। वे महसूस कर रहे थे कि आजादी की लड़ाई की सफलता के लिए ऐसे आदमियों की जरूरत है, जो संवेदनशील हो, न्याय प्रिय हो, परोपकारी हो, स्वार्थरहित हो, त्वागी हो,अन्याय का विरोध करने वाले हो, धन होते हुए भी सादगी का जीवन व्यतीत करने वाला हो

प्रेमचंद की 'सती', ' राजा हरदौल', ' रानी सारंधा', 'विक्रमादित्य का तेगा', 'लैला'आदि ऐसी कहानियां हैं जिनमें उन्होंने इतिहास की छाया में भारत की इतिहास- प्रसिद्ध नारियों के चरित्र को उभारकर कर नारी जाति में राष्ट्रीय चेतना

उभारने का विशेष प्रयास किया है। यदि इसके लिए प्रेमचंद को कुछ इतिहास सम्मत कुछ तथ्य भी बदलने पड़े तो उन्होंने संकोच नहीं किया। 'राजा हरदौल' कहानी की कुलीना इतिहास- सत्य के अनुसार अपने पति की जुझाड़ू सिंह के आदेशानुसार अपने निर्दोष तेवर हरदौल को विषभरा भोजन कराती है। किंतु प्रेमचंद ने कुलीना को अपने पति की कुटिलआज्ञा की अवज्ञा कराके एक आदर्श एवं निर्भीक नारी- चरित्र के रूप में रखा है, जो अंधे होकर पति परमेश्वर के सिद्धांत को नहीं मानती । कुलीना स्पष्ट कहती है, कि नहीं यह पाप मुझसे ना होगा। यदि राजा मुझे उल्टा समझते हैं, तो समझे उन्हें मुझ पर संदेह है, तो हो। प्रेमचंद द्वारा लिखित 'सती' शीर्षक नाम की कहानी भी नारी जाति में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इस कहानी की चिंता देवी नाम की को वीरता के संस्कार अपने पिता से मिले थे जब वह 13 वर्ष की थी उसके पिता वीरगति पा गए थे और उस समय वह अपने पिता का आदर्श पूरा करने के लिए मातृभूमि को शत्रुओं के पंजे से छुड़ाने का व्रत लेती है। कालांतर में चिंता रतन सिंह नाम के एक योद्धा से विवाह कर लेती है समय बाद रति से संबोधित करने के लिए जाते हैं किंतु चिंता के प्रेम में उनका मन विचलित हो जाता है और वह रणभूमि से भाग आते हैं। जब चिंता को अपने पति की कायरता का पता लगता है तो वह यह सोचते हुए अपने आपको अग्नि राशि में विलीन कर देती है कि उसने जिस सच्चे वीर से विवाह किया था वह तो अपनी आत्मरक्षा के लिए एवं तुच्छ शरीर को बचाने के लिए क्षत्रिय धर्म का त्याग कर दिया। प्रस्तुत कहानी के संदर्भ में प्रेमचंद का विचार है कि केवल पुरुषों में राजनीतिक चेतना आने से ही देश स्वतंत्र नहीं हो सकता। नारी का सहयोग उसके लिए अपेक्षित ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है।

'धिक्कार' शीर्षक कहानी में प्रेमचंद ने यूनान के इतिहास में प्रसिद्ध 'पुजारिन का चरित्र चित्रण किया है जो राष्ट्र रक्षा के लिए अपने देशद्रोही पुत्र को हंसते हुए बंदी करवा देती है। प्रेमचंद के द्वारा लिखित जुगनू की चमक कहानी एक देश भक्ति कहानी है इस कहानी में लेखक ने एक वीर स्त्री रानी चंद्र कुंडली में अपने देश के लिए त्याग समर्पण की भावना को दिखाकर आम नारियों में भी देश भक्ति के भाव को जगाया है। अनाथ लड़की शीर्षक कहानी में उन्होंने स्त्री रत्न के रूप में एक ऐसी लड़की का चित्रण प्रस्तुत किया जो शास्त्री की परीक्षा पास करने के साथ-साथ अपनी मंडली के साथ देश प्रेम में डूबा गीत गाती है। इस कहानी में प्रेमचंद ऐसी लड़कियों के संबंध में कहते हैं अभी इस देश की स्त्रियों में ऐसे रतन मौजूद हैं जो देश में राष्ट्रवाद की भावना को जागृत करने के लिए लोगों को प्रेरित करती है। उनके इस कथन में नारी चेतना के भाव दिखाई देते हैं, जो कि औपिनिवेशिक काल में जागरूकता लाने के लिए आवश्यक है था क्योंकि यह सहज

ही समझा जा सकता है कि किसी भी देश में जागरूकता लाने के लिए जितने प्रयास पुरुषों के द्वारा किया गया उतनी ही प्रयास महिलाओं के द्वारा भी किया गया। महिलाओं ने भी देश में क्रांति के प्रसार में अपनी अग्रगण्य भूमिका निभाई।

सन 1920 में प्रेमचंद ने गांधीजी के प्रथम असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर अपनी राजकीय सेवाओं से त्यागपत्र दे दिया और आजीवन निर्भीक होकर लिखने का संकल्प लिया। मां, अनुभव, कुत्सा, डामूल का कैदी, माता का हृदय, जेल, पत्नी से पति, शराब की दुकान समरयात्रा, जुलूस , आहुति,सुहाग की सारी,, होली का उपहार ऐसी ही अनेक कहानियां लिखी जिनमें प्रेमचंद ने तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि में नारी जागरण का एक नया अध्याय खोला है। ' अनुभव 'शीर्षक कहानी में गांधीजी के सत्याग्रह आंदोलन में नारी के सहयोग के साथ प्रेमचंद ने यह भी बताया कि राजनीतिक चेतना की लहर विशेषता जवान युवक-युवतियों के मन में तरंगित हो रही थी। बुड्ढे लोग तो उस समय इतना स्वार्थी हो गए थे कि वह अपनी पेंशन की सुरक्षा अथवा ग्रेड वृद्धि में अपने कर्तव्य फर्म का इतिश्री समझते थे। प्रेमचंद जी ने 'जेल' कहानी में क्षमा और मृदुला के माध्यम से देश में भयंकर राजनीतिक अराजकता, पुलिस के अमानुषिक अत्याचार गांधीजी के असहयोग आंदोलन का प्रचार-प्रसार तथा विशेषत: भारतीय नारी समाज में राजनीतिक चेतना का उदय दिखाया गया। क्षमा जालियांवाला बाग में अपने पति तथा पुत्र को खो चुकी है ,और मृदुला कृषक समाज के विरुद्ध किए गए सत्याग्रह में पुलिस के अमानवीय बहारों के परिणाम स्वरुप अपने पति पुत्र तथा सास का बलिदान अपनी आंखों के सामने देख चुकी है। इसलिए उन्होंने अन्य नारियों की तरह हताश होकर आत्महत्या नहीं की वरन अपने शत्रुअ ो के विरुध उनको स्वतंत्रता संग्राम में आत्म बल की चुनौती देने के लिए कूद पड़ी और त्याग व बलिदान के बाद आत्मबल में कितनी ज्योति तथा निर्भीकता आ जाती है इसे अगर देखा जाए तो क्षमा और मृदुला नाम के चरित्र में स्पष्टत:दिखता है। प्रेमचंद के 'जुलूस 'शीर्षक कहानी की मिठलबाई जो कि दरोगा बीरबल की पत्नी है और वह भी अपने आपको इब्राहिम अली के जनाजे में जाने से नहीं रोक पाती तथा अपने पति दरोगा बीरबल को फटकार ते हुए कहती है कि_ "शायद तुम्हें जल्दी तरक्की मिल जाए अगर वह तरक्की गुनाहों के खून से हाथ रंगकर्मी ली हो तो वह तरक्की नहीं होती वह देशद्रोह होता है तुम्हारी कारगुजारी का इनाम तो तब मिलेगा जब तुम किसी खूनी को खोज निकालो गे किसी निर्दोष को सजा पाने से बचा पाओगे।

प्रेमचंद का उद्देश्य देश की नारियों में भी राष्ट्रीय चेतना के भाव जागृत करना था, जिससे वह भी पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त होकर आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग ले सकें। होली का उपहार शीर्षक कहानी में प्रेमचंद दिखाते हैं कि एक नवविवाहिता लड़की आजादी की लड़ाई में न केवल नजर भाव से हिस्सा

लेती है, बल्कि युवकों का नेतृत्व भी करती है तथा अपने नवयुवक पति को भी इस लड़ाई में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करती है और उसके गले में फूल माला डालकर जेल जाने के लिए विदा करती है। प्रेमचंद ने अपनी कथा साहित्य में ऐसी सैकड़ों आम नारियों के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं जो अपने पति के गुनाहों का पश्चाताप सेंड करती है उनकी प्रतिशोध शीर्षक कहानी की माया भी ऐसी ही भारतीय नारियों में से एक थी जो उन लोगों की सेवा के लिए आगे बढ़ती है जो उसके पति के स्वार्थों के कारण तबाह हुए थे। वह इस वारदात से कहती है मेरे पति के हाथों जो घर तबाह हुए हैं उनका मुझे पता बतला दो शायद मैं उनकी सेवा कर सकूं । इनके कथा साहित्य से हमे तत्कालीन भारत की औपनिवेशिक कालीन शासन की व्यवस्था के सजीव एवं पूर्ण चित्र देखने को मिलते हैं, अर्थात प्रेमचंद ने राष्ट्रवाद के अवरोधक तत्व और औपनिवेशिक कालीन शासन की विषमताओं एवं सामाजिक विषमताओं के यथार्थ चित्रण से हैं। उन्होंने अपने कहानियों में समाज सुधार एवं आदर्शवाद से अवतरित होकर देश के पुनर्निर्माण के लिए नवीन आदर्श मान्यताओं तथा चेतना द्वारा सामाजिक दुरावस्था के निराकरण का भी प्रयास किया है। प्रेमचंद काऔपनिवेशिक शासन का विरोध उसके द्वारा निर्मित संरचनाओं की आलोचना अपने कथा साहित्य के माध्यम से किया है। उन्हें जहां भी मौका मिलता वह सरकार के दफ्तरों को मापुलिस कमान न्याय कामा शिक्षा आदि संस्थानों की जिन के महत्व की गाथा सरकार एवं उसके समर्थक बुद्धिजीवी गाते नहीं थकते उन सब की कड़ी आलोचना उन्होंने की। औपनिवेशिक शासन काल में रिश्वत न लेने वाले व्यक्तियों का जीवन, भ्रष्ट प्रवृत्ति के लोग कितना कष्टप्रद बना देते हैं, इसका भी उल्लेख उनके कथा साहित्य में जीवंत रूप से देखने मिलता है।

इस तरह प्रेमचंद ने अंग्रेजी राज्य में सर्व व्याप्त अराजकता और अंधकार के इस वातावरण में सदियों से संघर्षरत देश में राष्ट्रवाद के सुनहरे भविष्य के प्रति अपना विश्वास कथा साहित्य के माध्यम से जाहिर किया। प्रेमचंद के कथा साहित्य में विकसित राष्ट्रभक्ति का ओजस्वी परिदृश्य उनकी विशिष्ट और बहुत पुण्य चिंतन धारा की झलक को दिखाता है। इस प्रकार कथा साहित्य के माध्यम प्रेमचंद ने भारतीय जनमानस में राष्ट्रवादी प्रवृत्ति की धारणा को सशक्त बनाया।

संदर्भ

१ डॉक्टर गोपाल हिंदी कहानी का इतिहास , पृ ५२
२ कमल किशोर गोयंका: प्रेमचंद विश्वकोश: प्रभात प्रकाशन दिल्ली पृष्ठ 432
३ प्रेमचंद: ममता, मान सरोवर (भाग-5) पृष्ठ 205
४ प्रेमचंद विक्रमादित्य का तेगा गुप्त धन भाग 1 पृष्ठ 52 -72 ५प्रेमचंद नमक का दरोगा मानसरोवर भाग 8 पृष्ठ 2003 ६प्रेमचंद ज्वालामुखी वही पृष्ठ ८७_ ८८
७ प्रेमचंद जेल' मानसरोवर भाग -7
८ प्रेमचंद डिक्री के रुपए मानसरोवर भाग-3 पृष्ठ 2सिद्धेश्वर प्रसाद छायावादोत्तर काव्य पृष्ठ 111 वही पृष्ठ ३८१